

# ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान बिसवाँ सीतापुर



||| सार - वाणी |||

आत्मा जानो केन्द्र पर, परिधि पर रहता जीव!  
बीच में सब माया रहे, जीव को बनना पीव!!

केवल विहंगम चाल से, उड़कर पहुँचे जीव!  
होवे सन्मुख केन्द्र के, जीव बन गया पीव!!

अचल , अलौकिक , सत्यपद, मुक्ति , मोक्षपद सोय!  
कोई परिवर्तन नहीं, वही आत्मपद होय!!

तैंतीस कोटि देवता, ब्रम्हा , विष्णु , महेश!  
सब माया में रम रहे, कोई ना जाना ईश!!

मन, माया दो पाट है, जिसमें पिसता जीव!  
सन्मुख होवे केन्द्र के, तुरत मुक्त हो जीव!!

**मैं और शून्य में क्यों पड़ा, यह माया पद जान!  
इन दोनों को छोड़कर, केवल आत्म जान!!**

**जो कानों से सुन रहा, आँख से देखे जोय!  
यह तो आत्म है नहीं, यह तो मैं ही होय!!**

**मैं को ही है छोड़ना, जानों पद निर्वाण!  
मैं तो मन है, काल है, यह माया पद जान!!**

**जब "मैं" था तब हरि नहीं, अब हरि है "मैं" नाहिं!  
केवल हरि को जानना, "मैं" को जानों नाहिं!!**

**माया से होना अनन्य, यही है माया से वैराग!  
जीव हो सन्मुख आत्म के, क्रिया, कर्म, माया को त्याग!!**

मन, माया से निकलना , यही जीव का लक्ष्य ।  
इसीलिए है जानना , आत्म को प्रत्यक्ष ॥

केवल आत्म छोड़कर, बाकी माया जान ।  
इसीलिए ही मुख्य है , आत्म की पहिचान ॥

वेद, शास्त्र सब क्यों बने, इसको भी तू जान ।  
सबका मूल है आत्मा , इसको तू पहिचान ॥

आत्मा , ईश्वर एक है , यही मूल है , सार ।  
केवल आत्म जानकार, माया से हो पार ॥

तन, मन, सुरत ही तीन पद, यह तीनो है द्वैत ।  
चौथा पद है आत्मा , यही ईश अद्वैत ॥

जो तुम चाहो ईश को, छोड़ सकल की आस ।  
उसी के जैसा ह्वै रहो , सब सुख तेरे पास ॥

एक है ईश्वर, सत वहीं ,मूर्ति नही तस्वीर ।  
वही अनामी, सतपुरुष , कोई नहीं शरीर ॥

एक आत्मा, परमपद , वही है ईश्वर जान ।  
सन्मुख होकर जानना, सहज, समर्पण ठान ॥

**अलग शरीर से आत्मा, करता नहीं स्पर्श!**

**अंदर बाहर है नहीं, गुरु से करो विमर्श!!**

**सभी देवता, जीव सब, लोक प्रकृति सब जान!**

**संचालित हैं ब्रम्ह से, इसे द्वैत पद मान!!**

**तैंतीस कोटि देवता, ब्रम्हा, विष्णु, महेश!**

**सप्त ऋषि भी कर रहे, "ब्रम्ह" की स्तुति शेष!!**

**कठिन तपस्या से मिले, स्वर्ग लोक यह जान!**

**सभी देवगण कर रहे, नाद ब्रम्ह का ध्यान!!**

**ब्रम्ह द्वैत को छोड़कर, केवल आत्म जान!**

**आत्म ईश्वर एक है, इसको ही पहिचान!!**



एक है, ईश्वर दो नहीं, तीन, चार जो माने ।

अज्ञानी सबसे बड़ा, मूर्ख उसी को जाने ।।

ईश्वर के अतिरिक्त जो, किसी की पूजा होय ।

भवसागर, माया यही, यही विमुखता होय ।।

ज्ञान, ध्यान से न मिले, क्रिया कर्म भी छोड़ !

केवल आत्म बोध से, खुद से खुद को जोड़ ।।

आत्मा और अनात्मा में, भेद जो कोई जाने।

ईश्वर और अनीश्वर को, वह ही केवल जाने ।

प्रकाश को आत्मा मानते, यह है थोथा ज्ञान ।  
सात खण्ड प्रकाश के , यह माया पद जान ॥

प्रकाश को अनात्मा जानकर, स्वर्ग लोक है जान ।  
केवल आत्मबोध से , आत्म को पहिचान ॥

अनहदनाद ही पुरुष है, यही अनीश्वर होय ।  
इससे आत्म न मिले, यह माया पद होय ॥

ईश्वर जैसी सत्ता है , ईश्वर नहीं है जान ।  
इसे अनीश्वर मानते, यह माया पद मान ॥

पुरुष और सत्पुरुष में, भेद जो जाने कोय ।  
वह माया से मुक्त है , आत्म जाने सोय ॥

माया में सब जग फँसा, कोई न जाने मर्म ।  
केवल आत्म जानना, सत्य सनातन धर्म ॥

**आत्मज्ञान होने से हमारे अंदर स्वतः होने वाले परिवर्तन:-**

**1. परमपद:- जीव को परमपद की प्राप्ति हो जाती है! इसी पद को रामपद भी कहते हैं!**

**" जानति तुमहि तुमहि होई जाई "**

**2. रामराज्य:- " जीव" के सभी दुःख, तकलीफ़, मुसीबते खत्म होकर, वह सदैव प्रसन्न और शोक रहित रहता है!**

**" रामराज्य बैठे त्रैलोका, हर्षित भये गये सब शोका "**



**3. विवेक:- जीव को विवेक प्राप्त हो जाता है जिससे-**

**[ 1 ] विवेक वाली दृष्टि हो जाती है!**

**[ 2 ] बुद्धि निश्चयात्मक हो जाती है!**

**" बिन सत्संग विवेक न होई, रामकृपा बिन सुलभ न सोई "**

**4. रामकृपा:- सद्गुरु जो आत्मघट प्रकट कराता है! उसी पर जो धार गिरती है, जो हमें स्पर्श नहीं करती है उसी को "राम की कृपा" कहा जाता है राम की कृपा प्राप्त होने लगती है!**

**5. समअवस्था:- समअवस्था प्राप्त हो जाती है!**

**[ 1 ] हर्ष, विषाद न कछु मन आवा!**

**[ 2 ] हर्ष, शोक न हो मन माही !!**

**6. मानस रोग जड़ से समाप्त हो जाते हैं--**

**नेम, धर्म, आचार, तप, ज्ञान, यज्ञ, जप, दान!**

**भेषज पुनि कोटिन करै, रोग जाहि हरि जान!!**

**7. अकर्म:- हम अकर्म में आ जाते हैं!**

8. जीने की कला में परिवर्तन:- हम DOING से BEING में आ जाते हैं! अभी हम कहते हैं कि यह काम हम कर रहे हैं, रामपद मिलने पर कहते हैं - कि सब स्वयं ही हो रहा है! जैसे-

नदियाँ बह रही हैं!

हवा चल रही है!

सूर्य प्रकाश दे रहा है!

यह सब कर्म नहीं करते हैं! यह स्वयं हो रहा है!

**9. विद्या:- सकल अविद्या कर परिवारा!**

**सा विद्या या विमुक्तये!**

**विद्या वही है जो जीव को मुक्त कर दे!**

**विद्या ददाति विनयम्!**

**हम अविद्या से विद्या में आ जाते हैं!**

**10. जीव की अवस्था में परिवर्तन:- " जीव "**

**अवस्था से पीव अवस्था प्राप्त होती है! इसे ही मोक्ष कहते है!**

**11. हंसगति:- मन "कौवा" से "हंस" हो जाता है!**

**मन निर्मल हो जाता है! विवेक जागृत हो जाता है! नीर, क्षीर, विवेक का ज्ञान प्राप्त होता है!**

**12. माया से मुक्ति:- त्रिगुणी माया से पार हो जाता है!**

**जीव माया से बाहर निकल जाता है!**

**13. अनन्य:- जीव माया से अनन्य हो जाता है!**

**14. योगातीत:- जीव तीनों योगों से पार हो जाता है!**

**[ 1 ] शरीर और इंद्रियों का >>>> कर्मयोग**

**[ 2 ] मन का >>>> ज्ञानयोग**

**[ 3 ] सुरत का >>>> भक्तियोग**

**15. गुणातीत:- जीव तीन गुणों से पार हो जाता है!**

**[1] शरीर का तमोगुण**

**[2] मन का रजोगुण**

**[3] सुरत का सतोगुण**

**16. तीन लोकों से पार:- तीन लोक से पार चौथा पद, आत्मपद या रामपद है!**

**शरीर, मन और सुरत यह तीन पद है! अतः तीन लोकों से पार हो जाता है!**



## **17. मोक्ष, मुक्ति केन्द्र पर:-**

**[1] " जीव " की जीव अवस्था बदल कर पीव अवस्था हो जाती है, इसी को मोक्ष कहते हैं!**

**[2] "जीव" जो अभी तक मन द्वारा संचालित था! मन से मुक्त होकर आत्मा द्वारा संचालित हो जाता है!**

**[3] जीव की यात्रा पूरी हो जाती है, जीव केन्द्र पर आ जाता है!**

**[4] AUTO-FUNCTION कार्य करने लगता है, सब जो भी होने वाला होता है स्वतः ही होने है!**

**[5] सभी परिवर्तन स्वतः ही होने लगते हैं!**

**18. सारथी परिवर्तन:- पहले मन सारथी होता है! रामपद प्राप्त होने से राम द्वारा जीव संचालित हो जाता है!**

**19. सत्य:-**

**>>>> असतो मा सदगमय! <<<<**

**असत्य माया छूट जाती है, सत्य, रामपद या आत्मपद प्राप्त हो जाता है!**

**>>>> तमसो मा ज्योतिर्गमय! <<<<**

**सभी अविद्या, अंधकार समाप्त हो जाते हैं!**

**>>>> मृत्वं मा मृतंगमय <<<<**

**मृत्व से अमर, शास्वत, अविनाशी परमात्मा में आ जाते हैं!**

**20. ENLIGHTEENT :- मन से DARK ENERGY समाप्त हो जाती है मन निर्मल हो जाता है, मन हंस हो जाता है!**

**21. सुमति:- कुमति से सुमति में आ जाते हैं!**

**"" जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना,  
जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना! ""**

**22. द्वैत से पार:- चौथा पद, अद्वैत पद में पहुँचने पर द्वैत से पार हो जाते हैं!**

**23. तत्वों से पार:- सभी तत्वों से पार हो जाते हैं!  
अनन्त हो जाते हैं! परमतत्व में पहुँच जाते हैं!**

**24. भवसागर पार:- माया ही भवसागर है! अतः  
भवसागर पार हो जाता है!**

**25. सहज:- हम स्वतः ही सहज हो जाते है!**

**26. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में परिवर्तन:-**

**[I] काम बदल जाता है नाम में!**

**[II] क्रोध बदल जाता है दया में!**

**[III] लोभ बदल जाता है दान में!**

**[IV] मोह बदल जाता है प्रेम में!**

**[V] अहंकार बदल जाता है समर्पण में!**

**[VI] मद बदल जाता है नम्रता में!**

**[VII] मत्सर बदल जाता है परोपकार में!**

**सभी परिवर्तन स्वतः ही हो जाते है!**

**27. शून्य से निर्वाण में:- मन ही शून्य है अतः मन से पार होकर केन्द्र पर आत्मपद में आ जाते है!**

**निर्वाण पद प्राप्त हो जाता है!**

**28. तीन तापों से मुक्ती:-**

**दैविक, दैहिक, भौतिक तापा!**

**रामराज्य काहू न व्यापा!!**

**29. सभी शरीरों से पार:- स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, महाकारण शरीर इत्यादि सभी शरीरों से पार हो जाते हैं!**

**30. ब्रम्हाण्डों और प्रकृतियों से पार:-**

**सभी ब्रम्हाण्डों और सभी प्रकृतियों से पार हो जाते हैं!**

**प्रकृति वस में हो जाती है!**

**"जीव नियम के वस रहे, नियम प्रकृति अनुकूल!  
प्रकृति भी जाके वस रहे, सोई कहावे भूप!!"**

### 31. एकै साधे सब सधे:-

केवल एक आत्मा को साधने से सभी कुछ  
अपने आप होने लगता है! आप पूर्ण हो जाते हैं,  
सभी प्राप्त होने वाली चीजें प्राप्त कर लेते है!

अतः यही सत्य है, यही सनातन है, इसी को  
जानना हमारा धर्म है!

सुरेशादयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान

मोचकला बिसवां सीतापुर

[ ३० प्र० ]

सम्पर्क सूत्र:- 9984257903